SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

हिन्दी साहित्य में व्यंग्य दृष्टि

आभा मिश्रा, (Ph.D.), हिन्दी विभाग,
शास. के. आर. जी. महाविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
आभा मिश्रा, (Ph.D.), हिन्दी विभाग,
शास. के. आर. जी. महाविद्यालय,
ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 12/03/2022
Revised on : -----
Accepted on : 19/03/2022
Plagiarism : 01% on 12/03/2022

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 1%

Date: Saturday, March 12, 2022
Statistics: 16 words Plagiarized / 1686 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

fgUnh lkfgR; esa O;aX; n`f"V MkW- vkHkk feJk izk/;kid &fgUnh 'kkl- ds- vkj- th- egkfo|ky;] Xokfyj ¼e-iz-½ 'kks/k lkj % O;aX; fdlh Hkh le; ds lekt esa mRiUu vfu;ferkvksa] 'kks"k.k vkfn ds fo:) yM+kbZ esa vR;ar izHkkodkjh gfFkdj cudj mHkjk gSA O;aX;dkj ds fy, ;s dk;Z cgqr pqukSrhiw.kZ gksrk gSA O;aX; yss[ku dh jpuk&izfØ;k lkfgR; dh vU; fo/kkvksa ls fHkUu gksrh gSA lkekftd ljksdkjksa ls tqM+s lkfgR; l`tu esa leL;k dh tM+ dks lcls djhc ls Nwus ds fy, vfHkO;fä ds 'kCnksa dks O;aX; dh dlkSVh ij gh dluk iM+rk gSA O;aX; dk ewy mn~ns'; leL;k ds ewy ij pksV djuk gksrk gSA O;aX; esa O;k[;k dh ctl; csckdh ,oa Li"Vrk dh

शोध सार

व्यंग्य किसी भी समय के समाज में उत्पन्न अनियमिताओं, शोषण आदि के विरुद्ध लड़ाई में अत्यंत प्रभावकारी हथियार बनकर उभरा है। व्यंग्यकार के लिए ये कार्य बहुत चुनौतीपूर्ण होता है। व्यंग्य लेखन की रचना–प्रक्रिया साहित्य की अन्य विधाओं से भिन्न होती है। सामाजिक सरोकारों से जुड़े साहित्य सृजन में समस्या की जड़ को सबसे करीब से छूने के लिए अभिव्यक्ति के शब्दों को व्यंग्य की कसौटी पर ही कसना पड़ता है। व्यंग्य का मूल उद्देश्य समस्या के मूल पर चोट करना होता है। व्यंग्य में व्याख्या की बजाय बेबाकी एवं स्पष्टता की अधिक दरकार होती है।

मुख्य शब्द

हिन्दी साहित्य, व्यंग्य दृष्टि.

भारतीय काव्य शास्त्र में कथन के सम्प्रेषण में अर्थबोध की दृष्टि से तीन शब्द–शक्तियों का महत्व दर्शाया गया है– अभिधा, लक्षणा और व्यंजना। जो अर्थ अभिधा और लक्षणा से प्रकट नहीं किया जा सके या जब सामान्य अर्थ के स्थान पर विशेष अर्थ अभिव्यक्त करना हो तब वहाँ व्यंजना शब्द–शक्ति का प्रयोग किया जाता है। व्यंजना शब्द–शक्ति व्यंग्यार्थ को प्रकट करती है। 'संस्कृत भाषा में जो भी व्यंजनावृत्ति द्वारा बोधित या संकेतित हो, वही व्यंग्य है। जहाँ गूढ़ार्थ है, संकेतितार्थ है, वहाँ व्यंग्य है।'[1]

हिन्दी साहित्य में कबीरदास को व्यंग्य का आदि प्रणेता माना जाता है। मध्यकालीन संत साहित्य में तत्कालीन समाज में व्याप्त अंधविश्वास, आडम्बर, कुरीति आदि का कठोर शब्दों में कबीरदास ने विरोध किया और व्यंग्यात्मक दोहों के माध्यम से समाज को जागृत करने का सार्थक प्रयास किया। कबीर निडरता और दृढ़ता से कटाक्ष करते हुए कहते हैं:

''पाहन पूजैं हरि मिलै तो मैं पूजूं पहार।
घर की चाकी कोई ना पूजै पीस खाय संसार।।''

''काकर पाथर जोरि के, मस्जिद लयी बनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय।।''

आधुनिक हिन्दी साहित्य के पितामह भारतेन्दु हरिशचंद्र ने ब्रिटिश शासन के अत्याचारों, अव्यवस्थाओं, अमानवीय शोषण आदि के विरूद्ध व्यंग्य का प्रयोग एक शस्त्र के रूप में किया। वे भारतीय नवजागरण के अग्रदूत, सफल नाटककार जागरूक पत्रकार, कवि, लेखक और सशक्त व्यंग्यकार थे। आपका लिखा प्रहसन 'अंधेरी नगरी' (1881) व्यंग्य लेखन के क्षेत्र में मील का पत्थर बन गया। इसमें विवेकशून्य निरकुंश शासन व्यवस्था और धार्मिक पाखंड पर व्यंग्यात्मक भाषा–शैली द्वारा तीखा प्रहार किया गया है। इसके संवादों में निहित व्यंग्य इतना प्रभावशाली है कि हर युग में अराजकता और जर्जर राजनैतिक संचालन के विरोध में प्रासंगिक है। 'अंधेर नगरी' के संवाद समाज में लोकोक्ति के रूप में प्रचलित हैं। यथाः

''अंधेर नगरी चौपट राजा।
टके सेर भाजी, टके सेर खाजा।।''

– – – – –

''सेत सेत सब एक से, जहाँ कपूर कपास।
ऐसे देस कुदेस में, कबहुँ न कीजै बास।।''

व्यंग्य, समाज को आइना दिखाने का प्रभावकारी माध्यम है। नवजागृति और नवक्रांति का मार्ग प्रशस्त करने में व्यंग्य लेखन की अहम् भूमिका रही है। भारतेन्दु ने अपनी मुकरियों में भी व्यंग्य का सफल प्रयोग किया है। यथाः

''तीन बुलाए तेरह आवैं।
निज–निज बिपदा रोई सुनावैं।।
आँखें फूटें भरा न पेट।
क्यों सखि सज्जन नहिं, ग्रेजुएट।।''

भारतेन्दु के व्यंग्य अत्यंत प्रभावी और कालजयी हैं। स्वतंत्रता पूर्व व्यंग्य लेखन की सुदीर्घ परंपरा में उल्लेखनीय हैं– महावीर प्रसाद द्विवेदी, प्रताप नारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, बालमुकुंद गुप्त आदि। बालमुकुंद गुप्त ने तत्कालीन वायसराय लार्ड कर्जन को अपने व्यंग्य का निशाना बनाया। आपकी व्यंग्य दृष्टि भारतेन्दु युगीन रचनाकारों से भिन्न थी। उन्होंने व्यंग्यात्मक शैली में ब्रिटिश सरकार की भारत विरोधी नीतियों पर प्रहार किया। भारतीयों की हीन भावना दूर करने का प्रयास उन्होंने निरन्तर अपने लेखन द्वारा किया। 'शिवशंभू के चिट्ठे' आपका अत्यंत लोकप्रिय व्यंग्य प्रधान निबंध–संग्रह है, जिसमें समसामयिक परिस्थितियों पर तीव्र व्यंग्य किए गए हैं।

छायावादी युग में ईश्वरी प्रसाद शर्मा तथा पांडेय बैचेन शर्मा 'उग्र' ने कविताओं और पैरोडियों से अपनी गहरी समझ और निर्भीकता का परिचय''[2] देते हुए व्यंग्यपूर्ण रचनाऐं लिखीं। निर्भीकता व्यंग्य की पहली शर्त है। 'व्यंग्य की भाषा उसकी प्रहारक क्षमता को दोगुना करती है। व्यंग्य विसंगतियों के प्रति सहानुभूति नहीं दिखाता अपितु वह कठोर व तीक्ष्ण भाषा का प्रयोग करता है।'[3]

आधुनिक युग में व्यंग्य का विकास गद्यात्मक और पद्यात्मक दोनों ही रूपों में एक सशक्त धारा के रूप में हुआ। 'आधुनिक हिन्दी कविता में पहली बार निराला ने व्यंग्य और करूणा के साहचर्य का उपयोग यथार्थवादी काव्य रूप को नया संगठन देने के लिये किया।'[4] स्वंतत्रता पूर्व लिखी गयी इस बहुचर्चित सामाजिक व्यंग्यात्मक कविता का मूल स्वर प्रगतिवादी है। निराला व्यंग्य को बहुत धारदार पैनी भाषा के साथ 'कुकुरमुत्ता के माध्यम से सामने लाये। सर्वहारा वर्ग के प्रतीक के रूप में 'कुकुरमुत्ता' की यह पंक्तियाँ पूंजीवाद पर सटीक व्यंग्य हैंः

''खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट
डाल पर इतरा रहा कैपिटलिस्ट''

इसी क्रम में केदारनाथ सिंह, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, रघुवीर सहाय, धूमिल आदि की व्यंग्यात्मक कविताऐं पाठक को झकझोरती है और मन–मस्तिष्क पर अमिट छाप छोड़ती हैं। साठोत्तरी हिन्दी कविता में धूमिल की कविताऐं अपने समय की सामाजिक विसंगतियों और विद्रूपताओं पर तीखा व्यंग्य करती हैं। जनतांत्रिक मूल्यों से उठते विश्वास को दर्शाते हुए वे कहते हैंः

''दरअसल अपने यहाँ जनतंत्र
एक ऐसा तमाशा है
जिसकी जान
मदारी की भाषा है।''

राजनीति पर व्यंग्य करते हुए सुदामा पाण्डेय 'धूमिल' की बहुचर्चित कविता 'रोटी और संसद' में लिखते हैंः

''एक आदमी
रोटी बेलता है
एक आदमी रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी भी है
जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है
वह सिर्फ रोटी से खेलता है
मैं पूछता हूँ–''यह तीसरा आदमी कौन है''–
मेरे देश की संसद मौन है'

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में व्यंग्य को नवीन स्वरूप प्रदान करने में हरिशंकर परसाई का नाम अत्यंत महत्वपूर्ण है। बीसवीं सदी में व्यंग्य को साहित्य में विधा का स्थान दिलाने का श्रेय परसाई जी को प्राप्त है। 'परसाई जी की सारी रचना–प्रक्रिया और उनकी विचार–प्रक्रिया उस समाज के कटु यथार्थ के समानांतर चलती है। जिस समाज में अवसरवादी राजनीति है, अन्याय है, प्रजातंत्र अपनी परिभाषा खो चुका है, भ्रष्टाचार रक्तबीज बन गया हो, ऐसे कठिन समाज में परसाई ने अपने व्यंग्य में एक ऐसा शिल्प विकसित किया जिसमें कहने की सादगी, संवेदना की तीव्रता और भोगे हुए यथार्थ की तस्वीरें साफ उभरकर आती हैं।'[5]

व्यंग्य के प्रति अपनी दृष्टि स्पष्ट करते हुए परसाई जी लिखते हैं कि –'व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार करता है, जीवन की आलोचना करता है, विसंगतियों, मिथ्याचारों और पाखण्डों का पर्दाफाश करता है।'[6]

हिन्दी के श्रेष्ठ व्यंग्यकारों में अन्य उल्लेखनीय नाम हैं– शरद जोशी, श्रीलाल शुक्ल, ठाकुर प्रसाद सिंह, रवीन्द्रनाथ त्यागी, नरेन्द्र कोहली, ज्ञान चतुर्वेदी, सूर्यबाला, प्रेम जनमेजय, हरीश नवल आदि। हिन्दी गद्य विधाओं में व्यंग्य विविध आयामों में बहुत गहनता के साथ प्रचुर मात्रा में लिखा गया है। 'व्यंग्य न केवल एक स्वतंत्र बल्कि सशक्त विधा है, उसकी अपनी संरचना, अपना शिल्प है और उसका अन्य विधाओं में लिखा जाना भी उसके विधा होने में बाधक नहीं है।'[7]

व्यंग्य लेखन की रचना–प्रक्रिया साहित्य की अन्य विधाओं से भिन्न होती है। 'सामाजिक सरोकारों से जुड़े साहित्य सृजन में समस्या की जड़ को सबसे करीब से छूने के लिए अभिव्यक्ति के शब्दों को व्यंग्य की कसौटी पर ही कसना पड़ता है। व्यंग्य का मूल उद्देश्य समस्या के मूल पर चोट करना होता है। व्यंग्य में व्याख्या की बजाय बेबाकी एवं स्पष्टता की अधिक दरकार होती है। जितने सीधे–सादे सपाट लहजे में दबी हुई समस्या के मूल पर अपनी टिप्पणी करके उस समस्या को मुखरता से सामने ला दिया जायं, व्यंग्य उतना ही उत्कृष्ट कहा जा सकता है।'[8]

व्यंग्य किसी भी समय के समाज में उत्पन्न अनियमिताओं, शोषण आदि के विरूद्ध लड़ाई में अत्यंत प्रभावकारी हथियार बनकर उभरा है। व्यंग्यकार के लिए ये कार्य बहुत चुनौतीपूर्ण होता है। सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार प्रेम जनमेजय की दृष्टि में–'व्यंग्य निहायत गंभीरतापूर्वक लिखी गयी साहित्य की सहज सामग्री है। व्यंग्य कभी वंचित

पर चोट नहीं करता। इस बात का खास ख्याल रखा जाना चाहिए कि आपके व्यंग्य–बाण किसी वंचित को चोटिल न करते हों।'[9]

व्यंग्य गद्य की विधा के रूप में आज विकसित हो चुका है किंतु कुछ विद्वानों की दृष्टि में 'व्यंग्य अभिव्यक्ति की एक प्रमुख शैली है, जो अपने महीन आघात के साथ विषय के व्यापक विस्तार की क्षमता रखती है।'[10] व्यंग्य की प्रतिष्ठित पत्रिका 'व्यंग्य यात्रा' के संपादक श्री प्रेम जनमेजय के अनुसार– 'व्यंग्य एक शैली नहीं है और न ही लेखन पद्धति अपितु एक साहित्यिक प्रक्रिया है तथा लेखन की व्यवस्था है और इस रूप में वह अन्य विधाओं से मिश्रित होकर भी अभिव्यक्त होती है।''[11]

व्यंग्य शिरोमणि हरिशंकर परसाई की दृष्टि में 'एक व्यंग्यकार व्यक्ति जीवन की समस्याओं का एक ऐसा रेखाचित्र खींचता है, जिसे पढ़कर एक चैतन्य पाठक अपने आप से भी सवाल उठाने पर विवश हो जाता है।

सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार हरीश नवल की दृष्टि में 'व्यंग्य की मूल प्रवृत्ति बुराई को पहचानने, जानने और समाप्त किए जाने के विचार को पैदा करता है। सामाजिक बदलाव के लिए वैचारिक संघर्ष पुष्पित करता है। दिशा सूचक ही नहीं दिशा परिवर्तन भी करता है।' व्यंग्यकार अनूपमणि त्रिपाठी की दृष्टि में– 'व्यंग्य लिखने के लिए एक विशिष्ट दृष्टिकोण की जरूरत होती है। व्यंग्य लिखने के लिए जनमानस से जुड़ाव भी बहुत जरूरी है। व्यंग्य सताये हुए लोगों को ताकत देने वाला हो। व्यंग्य लिखने से पहले आप में बैचेनी नहीं हो तो लिखना सार्थक नहीं हो सकता।'

निष्कर्ष

स्पष्ट है कि हिन्दी साहित्य में व्यंग्यकारों की व्यंग्य दृष्टि ने पाठक को जागरूक करने की दिशा में सदैव महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर वैचारिक धरातल पर चिंतन–मनन की नवीन दृष्टि प्रदान की है।

यही एक व्यंग्यकार का लक्ष्य भी होता है। हिन्दी साहित्य में व्यंग्यकारों की व्यंग्य दृष्टि की पृष्ठभूमि में उनका सामाजिक दायित्व बोध और जन प्रतिबद्धता रही है। यह सच है कि व्यंग्य जब उद्देश्यपूर्ण होता है तभी वह अपने लक्ष्य को प्राप्त होता है। 'व्यंग्य पाठक के क्षोभ या क्रोध को जगाकर प्रकारान्तर से उसे अन्याय के विरूद्ध संघर्ष करने के लिए सन्नद्ध करता है।'[12]

संदर्भ सूची

1. लेख–*व्यंग्य का कारोबार,* डॉ. सुरेन्द्र वर्मा, rachanankar.org
2. नगेन्द्र एवं हरदयाल, *हिन्दी साहित्य का इतिहास,* मयूर बुक्स, नई दिल्ली, पृ. 42।
3. लेख–व्यंग्य का अर्थ, *स्वरूप* – Scotbuzz.org
4. कवि निराला, *नंद दुलारे बाजपेयी,* वाणी वितान, वाराणसी, पृ.51।
5. लेख–हिन्दी व्यंग्य परंपरा, डॉ. स्मृति शुक्ल, *डेलीहंट।*
6. परसाई हरिशंकर, *मेरी श्रेष्ठ रचनाऐं,* ज्ञानभारती प्रकाशन, पृ. vii (लेखक की बात)।
7. हिन्दी गद्य लेखन व्यंग्य और विचार, सुरेशकांत, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली, पृ. 69।
8. लेख व्यंग्य विधा के सामाजिक सरोकार, प्रेम जनमेजय, *राष्ट्रीय सहारा,* नई दिल्ली दिनांक 08.12.2013।
9. वही।
10. http//www.hindwi.org
11. साहित्य अमृत, अगस्त 2011, पृ. 15।
12. अमृतराय, *मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाऐं,* पृ. 5।

****